Sanskrit (Subsidiary and) GEN
B.A. (1st Part)

डॉ० रुक्मिणी रमण मिश्र
अतिथि विद्वान
आर.सी.एस. कॉलेज, मंगैत
बेगूसराय

(संस्कृत साहित्य का इतिहास)

पूर्व में बताया गया है कि महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण को आदिकाव्य एवं महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि कहा जाता है। उन्हें यह उपाधि ऐसे ही नहीं मिल गई। सत्य तो यह है कि महर्षि वाल्मीकि के पहले तक न इतने विशाल किसी महाकाव्य का अस्तित्व पाते हैं और न महाकवि की। केवल कथानक में ही यह महाकाव्य अपने आदित्व को द्योतित नहीं करता अपितु 'रामायण' का सौन्दर्य लोगों को इतना अभिभूत किया कि इसकी प्रतिष्ठा दिग्दिगन्त तक हो गई। इस महाकाव्य ने देश और काल की सीमा लांघकर अपने को सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक बना लिया। उस ऐतिहासिक काल में जब अभी वैदिक एवं लौकिक संस्कृत का ढंग से विभाजन भी नहीं हुआ था, इसका काव्य सौन्दर्य चमत्कृत करने

वाला तो महर्षि वाल्मीकि से पहले संस्कृत साहित्य में महाकाव्यता का अभाव था। लेखन कार्य तो आदितम समय से ही होता आया तो वेद तो स्वयं अपनी अपौरुषेयता बताते हैं, परन्तु महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत साहित्य में समयता का प्रादुर्भाव किया जो किसी महाकाव्य की सर्वप्रथम शर्त होती है।

भारतीय साहित्य के इतिहास में उस दिन, उस घड़ी एवं उस पल को अतीव शुभद माना जाता है जब महर्षि वाल्मीकि के मुख से यह करुणापूर्ण वाग्धारा अकस्मात् ही प्रस्फुटित हो गया-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्

अर्थात् हे निषाद! तुमने काम भावना से अत्यन्त मोहित इस क्रौंच पक्षी का वध किया है अतः तुम सदा के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं करो अर्थात् तुम्हारी मृत्यु हो जाय।

Rukmini Reva M

क्रमशः